OPEN ACCESS

DRA ANNUAL INTERNATIONAL CONFERENCE 2024 ON "SOCIO-ECONOMIC TRANSFORMATION: OPPORTUNITIES AND CHALLENGES"

Int. Jr. of Contemp. Res. in Multi. *PEER-REVIEWED JOURNAL* *Volume 4 [Special Issue 1] Year 2025*

Conference Paper

झुंझुनूं जिलें में जोतों के आकार का एक प्रतिकात्मक अध्ययन

अमित कुमार [1], डॉ. एस. एस.खींची [2]*

[1] शोधार्थी, भूगोल विभाग, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

[2] प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग, डॉ. भीमराव अंबेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्री गंगानगर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *डॉ. एस. एस. खींची

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17847833

सारांश

जोतों का आकार फसल प्रतिरूप एवं उत्पादन को प्रमुख रूप से प्रभावित करता है। जोत के आकार का कृषक के जीवन स्तर से घनिष्ठ धनात्मक सह–सम्बन्ध होता है, शोध क्षेत्र में व्यक्तिगत, संयुक्त व संस्थागत जोत पाई गई हैं, जिनमें सीमान्त जोत 0 से 1 हैक्टेयर, लघु जोत 1 से 2 हैक्टेयर, अर्द्धमध्यम जोत 2 से 4 हैक्टेयर, मध्यम जोत 4 से 10 हैक्टेयर, वृहत जोत 10 से 20 हैक्टेयर, अत्यधिक वृहत जोत 0 से 1 हैक्टेयर है। अध्ययन क्षेत्र में व्यक्तिगत जोतों की कुल संख्या 197125 है, जिनका क्षेत्रफल 447020.9 हैक्टेयर है, व्यक्तिगत जोतों में सबसे अधिक 2.0 से 3.0 आकार के जोतों की संख्या 33834 है, वहीं क्षेत्रफल के अनुसार सबसे अधिक जोत भी 2.0 से से 3.0 पाई गई हैं। क्षेत्र में संस्थागत जोतों की कुल संख्या 92 है, जिनका क्षेत्रफल 378.02 हैक्टेयर हैं, जिसमें सबसे अधिक 20.0 से अधिक आकार के जोतों की संख्या 22 है,जबकि क्षेत्रफल पर भी इन्ही जोतों का सबसे अधिक हैं। अध्ययन क्षेत्र में संयुक्त की संख्या 5899 है, जिनका कुल क्षेत्रफल 22131.1 हैक्टेयर है, संयुक्त जोतों में सबसे अधिक 1.0 से 2.0 आकार के जोतों की सबसे अधिक संख्या 1096 है, जबकि क्षेत्रफल के आधार पर सबसे अधिक क्षेत्रफल 10.5 से 20.0 आकार के जोतों का 4068.72 है। अध्ययन क्षेत्र में कुल जोतों की संख्या 185114 है, जिनका कुल क्षेत्रफल 464931.1 हैक्टेयर हैं। कुल जोतों में सबसे अधिक 1.0 से 2.0 आकार के जोतों की संख्या सबसे अधिक 54722 है, जबकि क्षेत्रफल के आधार पर सबसे अधिक क्षेत्रफल 2.0 से 3.0 आकार के जोतों का 84657.01 हैक्टेयर हैं। वर्तमान में अध्ययन क्षेत्र में जोतों के छोटे एवं बिखरे टुकड़ो में विभाजित हो रहे हैं, पिता की निजी सम्पति की तरह भूमि का भी समान विभाजन उसके पुत्र तथा पुत्रियों के बीच होता है, जिस कारण वृहत आकार के जोत लघु व सीमान्त जोतों में बदलते जा रहे है, जोतों आकार में विभाजन का प्रभाव क्षेत्र में उत्पादन व उत्पादकता पड़ा हैं। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या बढ़ते दबाव के कारण जोतों के आकार छोटे हो गए हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 16-12-2024
- **Accepted:** 21-02-2025
- **Published:** 05-03-2025
- **IJCRM:**4(SP1); 2025: 26-32
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

कुमार ए, एस. एस. खींची. झुंझुनूं जिलें में जोतों के आकार का एक प्रतिकात्मक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(SP1):26-32.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्दः फार्म, जोत, उत्तराधिकारी, सीमान्त, स्वामित्व, सामंती, लचीलेपन, पैमाना, उर्वरता

प्रस्तावना

भूमि ग्रामीण लोगों को सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है, साथ ही उन्हे जिविकोपार्जन का अवसर भी प्रदान कर रही हैं। ग्रामीण लोग न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से भी मिट्टी की गहराई से जुड़े है। भूमि का एक निवेश मूल्य है और वास्तव में अधिकां ा अविकसित क्षेत्रों में एक भूमि ही धन का सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं। यही कारण है कि ग्रामीण लोगों को "भूमि जोतने वाले को " का नारा उन्हे आकर्षित करता है। उत्पादन में स्वामित्व का प्रभाव किसानों को समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिक रूप से अधिक श्रम लगाने, बेहतर तकनीक अपनाने, सिंचाई में निवेश करने, भूमि विकास और भूमि निवेश में सुधार करने के लिऐ प्रेरित करता है, क्योंकि वह अपने निवेश और श्रम के फल से लाभान्वित होता है। भूमि का स्वामित्व किसानों को ऋण प्राप्त करने के लिऐ सुरक्षा प्रदान करने में मदद करता हैं।

© 2025 अमित कुमार, डॉ. एस. एस. खींची. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अध्ययन क्षेत्र–

अध्ययन क्षेत्र झुंझुनूं जिला अर्द्धमरूस्थलीय क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, जो राजस्थान राज्य के उत्तर पूर्व दिशा में अवस्थित है, वर्तमान के सन्दर्भ में उत्तर पूर्व में स्थित सीकर, झुंझुनू, तथा चूरू जिलों का सम्पूर्ण भू–भाग शेखावाटी के नाम से विख्यात है, ऐतिहासिक दृष्टिकोण के अनुसार कच्छावा राजकुमार राव शेखाजी से पूर्व इस भू–भाग पर सैनिक घुमंतु शासक आते–जाते रहे है, राव शेखाजी ने आमेर से इस क्षेत्र पर शासन किया, राव शेखाजी ने आमेर की सामन्त ाही का उल्लघन किया एवं 1471 ई. में अपनी सम्प्रभूता की घोषणा करने के बाद इस भू–भाग का नाम शेखावाटी रखा एवं आज तक सम्पूर्ण भू–भाग को शेखावाटी क्षेत्र के रूप में जाना जाता हैं। मानचित्र 1.1 से स्पष्ट है कि झुंझुनूं जिला राजस्थान राज्य के उत्तर–पूर्व में अवस्थित है। झुंझुनूं जिला समुद्रतल से लगभग 338 मीटर की ऊंचाई पर हैं, जो राजस्थान राज्य में $27^0$38′ उत्तरी अक्षांश तक तथा $75^0$02′ से $76^0$06′ पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित हैं।

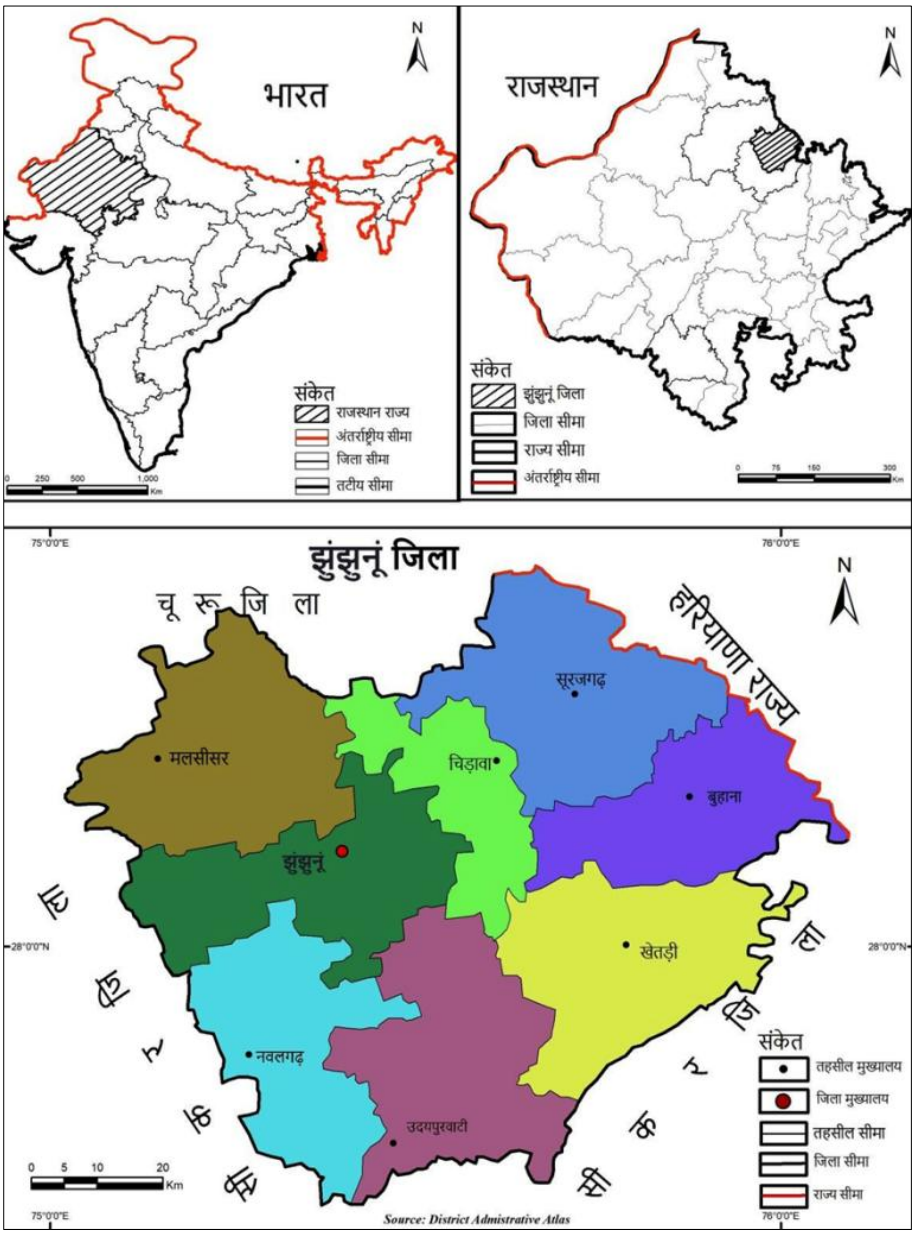

मानचित्र 1.1: झुंझुनू जिले का अविस्थितिक मानचित्र

जिला उत्तर–पश्चिम में चूरू जिला तथा दक्षिण–पश्चिम में सीकर जिला तथा उत्तर–पूर्व में हरियाणा राज्य के हिसार एवं महेन्द्रगढ जिले से घिरा हुआ है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 5928 वर्ग किलोमीटर है। भौगोलिक क्षेत्रफल के अनुसार देखा जाए तो मलसीसर तहसील सबसे बडी तहसील है, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 881.69 वर्ग किमी. है, जबकि सबसे छोटी तहसील चिड़ावा है, जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 513.52 वर्ग किमी है। झुंझुनू को प्रशासनिक दृष्टि

© 2025 अमित कुमार, डॉ. एस. एस. खींची. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

से वर्तमान में 08 उपखण्डों एवं तहसीलों (झुंझुनूं, मलसीसर, बुहाना, उदयपुरवाटी, नवलगढ़, खेतडी, चिडावा व सूरजगढ) में विभक्त किया गया हैं जिले मे कुल 06 (मण्डावा, बिसाऊ, मुकुन्दगढ, सिंघाना, गुढागौडजी व सिंघाना) उप तहसील भी है। जिले में कुल 11 (झुंझुनूं, अलसीसर, बुहाना, उदयपुरवाटी, नवलगढ, खेतडी, चिडावा, सूरजगढ, सिंघाना, पिलानी व मण्डावा) पंचायत समितियां भी है। इसी प्रकार जिले में नगर परिषद् (झुंझुनूं) एवं 11 (मण्डावा, बगड, बिसाऊ, पिलानी, विद्याविहार, सूरजगढ, चिडावा, खेतडी, मुकुन्दगढ, नवलगढ व उदयपुरवाटी) नगर पालिकाएं भी है। अध्ययन क्षेत्र झुंझुनूं जिले की 2011 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या 2137045 है जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का 3.12 प्रतिशत है। जिले में 2011 के अनुसार जनघनत्व 361 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर है। यहां 22.89 प्रतिशत जनसंख्या ही शहरी क्षेत्र में निवास करती है। जबकि जिले में तीन चौथाई से अधिक जनसंख्या आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। यहां वर्तमान में लिंगानुपात 950 है तथा साक्षरता दर 74.13 प्रतिशत है। जिलें में महिला व पुरूष की साक्षरता दर क्रमशः 60.95 व 86.90 प्रतिशत हैं। जिले में 16.88 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं 1.95 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या निवास करती है।

परिकल्पना –

- अध्ययन क्षेत्र में कृषि मुख्य आधारभूत संसाधन हैं।
- अध्ययन क्षेत्र में विगत दशकों में आधुनिक तकनीकी का अत्यधिक उपयोग हुआ हैं।
- अध्ययन क्षेत्र में जोतों के आकार का आंकलन करना।

उद्देश्य –

- अध्ययन क्षेत्र में जोतों के आकार की पहचान करना।
- अध्ययन क्षेत्र में भू–जोतों के आकार व स्तर का आंकलन करना।
- अध्ययन क्षेत्र में भू–जोतों के औसत आकार को जानना।

समंको के स्त्रोत व विधितंत्र –

प्रस्तुत शोध पत्र आगात्मक व निगात्मक पद्धति पर आधारित है, शोध कार्य हेतु द्वितीय समंकों का संग्रहण सांख्यिकी विभाग व भू–अभिलेख शाखा झुंझुनूं से प्राप्त किऐ गऐ, प्रस्तुत शोध पत्र में भू–जोतों के स्वामित्व के आधार पर उनकी संख्या व क्षेत्रफल का प्रतिशत ज्ञात किया गया, तथा कुल जोतों के आकार, संख्या, व प्रतिशत ज्ञात किया गया, इसके साथ–साथ जोतों के औसत आकारों का भी आंकलन किया गया एवं प्राप्त परिणामों को उपयुक्त आरेख में प्रर्दिशत किया गया।

कृषि जोतों का अर्थ –

हमारे देश में जोत अथवा फार्म प्रायः समानार्थी शब्द है, हालांकि ये वैज्ञानिक आधार पर समान नहीं है। एक भारतीय कृषक परिवार की समस्त कृषि भूमि एक ही भूखण्ड में नहीं होती, क्योंकि उत्तराधिकारी कानुनों व भूमि के क्रय एवं विक्रय नियमों से अलग–अलग भूखण्ड विभाजित हो जाते है, किसी एक कृषक का स्वामित्व जितनी कृषि भूमि पर होता है, वह जोत कहलाता हैं।

जोत वह भूमि है जिस पर कृषि एक इकाई के रूप में किसी व्यक्ति या परिवार द्वारा आंकी जाती है। जोतों की भूमियों पर सामुहिक भू–स्वामित्व या एक कृषक परिवार के कृषि कार्य करने के रूप में परिभाषित किया जाता है, इसके अन्तर्गत भू–स्वामित्व, सिंचाई एवं अन्य सुविधाऐं शामिल है, जिसका उपयोग व्यक्तिगत या सहकारी केन्द्र के रूप में अत्यधिक कृषि उत्पाद के लिऐ होता है। जोतों का आकार आधुनिक कृषि प्राविधियों के प्रयोग से कृषि उत्पाद वृद्धि की अभिवृद्धि एवं कार्य की सफलता पर निर्भर करता है। कृषि पर लगातार बढ़ती जनसंख्या का भार, भूमि सुधार कानून में लचीलेपन की कमी आदि कारणों से वृहत आकार के जोत, लघु आकार के जोत में परिवर्तित हो रहे हैं।

जोतों का आकार–

जोतों का आकार शस्य प्रारूप व उत्पाद को प्रमुख ढ़ंग से प्रभावित करता है, जोतों का आकार का कृषक के जीवन स्तर से घनिष्ठ घनात्मक सह–सम्बन्ध होता है, कृषकों के सहायक साधनों की कमी के कारण बड़े कृषक अपनी सभी कृषि भूमि पर समान कुशलता के साथ सभी फसलों का उत्पाद ले सकते है, परन्तु छोटे जोतों वाले कृषक उत्पाद कम ले पाते है। जोतों का आकार जहां एक कृषि भूमि पर जनसंख्या के भार की समस्या की ओर संकेत है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक–आर्थिक कारणों के साथ–साथ वातावरण भी प्रभावित करता है। जोतों का आकार कृषि का पैमाना, उत्पाद तकनीक, कृषि यंत्रों की संख्या, यांत्रिक शक्ति निवेश की मात्रा, तथा कृषि उत्पादन क्षमता पर निर्भर होते है, अतः कहा जा सकता है कि जोतों का आकार कृषि पद्धति के चुनाव की आधारभूत इकाई हैं।

जोत का प्रमाणिक आकार आर्थिक–सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार कृषि कार्य करने के प्रकार पर निर्भर है। जोतों के आकार अनेकों सुविधाओं से उनके आकार में परिवर्तित किया जा सकता है, जैसे– व्यक्तिगत, वित्तीय प्रबन्धन, प्राविधिक प्रबन्धन, आदि जोतों का औसत आकार भूमि पर जनसंख्या के बढ़ते दबाव, कृषि निर्भरता, उत्तराधिकारी के नियम सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियां, भौतिक दशाऐं तथा शस्य स्वरूप से निर्धारित होता है। चयनित शोध क्षेत्र झुंझुनूं जिले में जोतों के आकार में तालिका 4.1 के विवरणानुसार भारी बदलाव देखने को मिलता हैं।

1. व्यक्तिगत जोत–

अध्ययन क्षेत्र में तालिका 4.1 के आंकलन से स्पष्ट है क्षेत्र में कुल व्यक्तिगत जोत 197125 है, जिसका क्षेत्रफल 447020.9 हैक्टेयर है, व्यक्तिगत जोतों में सबसे अधिक 1.0 से 2.0 आकार के जोतों कि सबसे अधिक संख्या 53612 (27.20 प्रतिशत) है, वहीं क्षेत्र में इन जोतों के क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे अधिक क्षेत्रफल 2.0 से 3.0 आकार के जोतों का है, जिनका क्षेत्रफल 82546.03 हैक्टेयर (18.47 प्रतिशत) पाया गया है। क्षेत्र में व्यक्तिगत जोतों की संख्या सबसे कम 20.0 से अधिक आकार के जोतों की है, जो की 123 (0.6 प्रतिशत) पाई गई है। क्षेत्र में क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे कम जोत 20.0 से अधिक आकार के जोतों की संख्या 3107.45 (0.70 प्रतिशत) पाई गई है, इस प्रकार व्यक्तिगत जोतों के आकार में भारी असमनाताऐं देखने को मिलती हैं।

तालिका 4.1 झुंझुनूं जिलें में स्वामित्व के अनुसार व्यक्तिगत जोतों की संख्या एवं क्षेत्रफल वर्ष – 2021–22

क्र.स.	जोत का आकार वर्ग हैक्टेयर में	संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	प्रतिशत
1.	0.5 से कम	14223	7.22	4356.57	0.97
2.	0.5 से 1.0	28498	14.46	21330.61	4.77
3.	1.0 से 2.0	53612	27.20	77471.99	17.33
4.	2.0 से 3.0	33834	17.16	82546.03	18.47
5.	3.0 से 4.0	19336	9.81	66361.09	14.85
6.	40 से 5.0	11041	5.60	49002.71	10.96
7.	5.0 से 7.5	12120	6.15	78873.54	17.64
8.	7.5 से 10.0	3933	2.00	33463.47	7.49
9.	10.5 से 20.0	20405	10.35	30507.47	6.82
10	20.0 से अधिक	123	0.06	3107.45	0.70
योग		197125	100.00	447020.9	100.00

स्त्रोत–कृषि गणना प्रतिवेदन, (2000–2001), झुंझुनूं

© 2025 अमित कुमार, डॉ. एस. एस. खींची. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. संयुक्त जोत–

अध्ययन क्षेत्र में तालिका 4.15 के अवलोकन से स्पष्ट है कि क्षेत्र में स्वामित्व के अनुसार संयुक्त जोतों में भी भारी असमनाताऐं है, तालिकानुसार क्षेत्र में संयुक्त जोतों कि कुल संख्या 5899 है, जिनका कुल क्षेत्रफल 22131.1 हैक्टेयर है, विभिन्न आकार के अनुसार इन जोतों में भी असमानताऐं देखने को मिलती है, क्षेत्र में सबसे अधिक संयुक्त जोतों की संख्या 1.0 से 2.0 आकार के जोतों की संख्या 1096 (18. 58 प्रतिशत) है, वहीं सबसे कम इस वर्ग के जोतों में 20.0 आकार से अधिक जोतों की संख्या 31 (0.53 प्रतिशत) पाई गई है, क्षेत्रफल के अनुसार संयुक्त जोतों में सबसे अधिक संख्या 5.0 से 7.5 आकार के जोतों की संख्या 4835.86 (21.85 प्रतिशत) है, जबकि सबसे कम 0.5 से कम आकार के जोतों का है, जिनकी संख्या 125.83 (0.57 प्रतिशत) पाई गई है, इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में संयुक्त जोत भी असमानताऐं लिए हैं।

तालिका 4.2: झुंझुनूं जिलें में स्वामित्व के अनुसार संयुक्त जोतों की संख्या एवं क्षेत्रफल वर्ष – 2021–22

क्र.स.	जोत का आकार वर्ग हैक्टेयर में	संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	प्रतिशत
1.	0.5 से कम	692	11.73	125.83	0.57
2.	0.5 से 1.0	504	8.54	380.01	1.72
3.	1.0 से 2.0	1096	18.58	1617.73	7.31
4.	2.0 से 3.0	853	14.46	2098.12	9.48
5.	3.0 से 4.0	692	11.73	2380.43	10.76
6.	4.0 से 5.0	536	9.09	2386.27	10.78
7.	5.0 से 7.5	796	13.49	4835.86	21.85
8.	7.5 से 10.0	342	5.80	2946.45	13.31
9.	10.5 से 20.0	357	6.05	4568.72	20.64
10	20.0 से अधिक	31	0.53	791.68	3.58
योग		5899	100.00	22131.1	100.00

स्रोत–कृषि गणना प्रतिवेदन, (2000–2001), झुंझुनूं

3. संस्थागत जोत–

अध्ययन क्षेत्र में संस्थागत जोतों की संख्या 92 है, जिनका क्षेत्रफल 387.02 हैक्टेयर है, जिसमें सबसे अधिक संख्या 20.0 से अधिक आकार के जोतों की संख्या 22 (23.91 प्रतिशत) है, वहीं सबसे कम 5.0 से 7.5 आकार के जोतों की संख्या एक (1.9 प्रतिशत) है, अध्ययन क्षेत्र में क्षेत्रफल के आधार पर सबसे अधिक 20.0 से अधिक आकार के जोतों का क्षेत्रफल 127.08 हैक्टेयर (33.60 प्रतिशत) है, सबसे कम 0.5 से कम आकार के जोतों का क्षेत्रफल 3.03 हैक्टेयर (0.80 प्रतिशत) हैं।

तालिका 4.3: झुंझुनूं जिलें में स्वामित्व के अनुसार संस्थागत जोतों की संख्या एवं क्षेत्रफल वर्ष – 2021–22

क्र.स.	जोत का आकार वर्ग हैक्टेयर में	संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	प्रतिशत
1.	0.5 से कम	16	17.39	3.03	0.80
2.	0.5 से 1.0	10	10.87	6.97	1.84
3.	1.0 से 2.0	14	15.22	20.29	5.37
4.	2.0 से 3.0	5	5.43	12.86	3.40
5.	3.0 से 4.0	4	4.35	14.46	3.83
6.	4.0 से 5.0	9	9.78	42.1	11.14
7.	5.0 से 7.5	1	1.09	5.5	1.45
8.	7.5 से 10.0	3	3.26	24.64	6.52
9.	10.5 से 20.0	8	8.70	121.14	32.05
10	20.0 से अधिक	22	23.91	127.03	33.60
योग		92	100.00	378.02	100.00

स्रोत–कृषि गणना प्रतिवेदन, (2000–2001), झुंझुनूं

4. कुल जोत–

क्षेत्र में स्वामित्व के आधार पर कुल जोतों में भारी असमानताऐं मिलती है, तालिका 4.16 के अनुसार कुल जोत 185114 है, जिनका क्षेत्र 464931 हैक्टेयर है। अध्ययन क्षेत्र में कुल जोतों में सबसे अधिक जोत 1.0 से 2.0 आकार के 54722 (29.56 प्रतिशत) है, जबकि सबसे कम 20.0 से अधिक 176 (0.10 प्रतिशत) है, वहीं क्षेत्रफल के हिसाब से सबसे अधिक 2.0 से 3.0 आकार के कुल 84657.01 हैक्टेयर (18.21 प्रतिशत) है, एवं सबसे कम 0.5 से कम आकार के 4485.43 हैक्टेयर (0.96 प्रतिशत) है। अध्ययन क्षेत्र में जोतों के आकार निम्न प्रकार से है, सीमान्त जोत 0 से 1 हैक्टेयर, लघु जोत 1 से 2 हैक्टेयर, अर्द्धमध्यम जोत 2 से 4 हैक्टेयर, मध्यम जोत 4 से 10 हैक्टेयर, वृहत जोत 10 से 20 हैक्टेयर, अत्यधिक वृहत जोत 0 से 1 हैक्टेयर है।

तालिका 4.4: झुंझुनूं जिलें में स्वामित्व के अनुसार कुल जोतों की संख्या एवं क्षेत्रफल वर्ष – 2021–22

क्र.स.	जोत का आकार वर्ग हैक्टेयर में	संख्या	प्रतिशत	क्षेत्रफल	प्रतिशत
1.	0.5 से कम	14931	8.07	4485.43	0.96
2.	0.5 से 1.0	29012	15.67	21717.59	4.67
3.	1.0 से 2.0	54722	29.56	79110.01	17.02
4.	2.0 से 3.0	34692	18.74	84657.01	18.21
5.	3.0 से 4.0	20032	10.82	68755.98	14.79
6.	4.0 से 5.0	11586	6.26	51431.08	11.06
7.	5.0 से 7.5	12917	6.98	77715.9	16.72
8.	7.5 से 10.0	4276	2.31	36434.56	7.84
9.	10.5 से 20.0	2770	1.50	35197.33	7.57
10	20.0 से अधिक	176	0.10	5426.16	1.17
योग		185114	100.00	464931.1	100.00

स्रोत–कृषि गणना प्रतिवेदन, (2000–2001), झुंझुनूं

1. सीमान्त जोत– 0 से 1 हैक्टयर

जिले में सीमान्त जोतों की संख्या 43943 है, जिनका क्षेत्रफल 26203.02 हैक्टयर है, एक हैक्टयर से कम आकार के कृषि जोतों को इसके अर्न्तगत सम्मिलित किया जाता है, इनकी संख्या कुल जोतों की संख्या का 23.74 प्रतिशत है, पर इनके स्वामित्व में कुल क्षेत्रफल का 5.46 प्रतिशत भाग है, जिले में आधे से अधिक कृषक सीमान्त जोतों वालें है, लेकिन इनके पास कृषि भूमि का बहुत छोटा सा हिस्सा होता है, क्षेत्र में आधे से अधिक कृषक अत्यन्त गरीब व अल्प साधनों वाले है, इनके द्वारा धारित भूमि की उत्पादकता भी निम्न स्तर की हैं।

तालिका 4.5: जोतों आकार, संख्या, प्रतिशत, क्षेत्रफल एवं कुल जोतों का प्रतिशत वर्ष – 2021–22

क्र.स.	जोतें	जोतों का आकार हैक्टेयर में	कुल जोतों की संख्या	कुल जोतों का प्रतिशत	क्षेत्रफल हैक्टेयर में	कुल क्षेत्रफल प्रतिशत में
1	सीमान्त जोतें	0 से 1 हैक्टेयर	43943	23.74	26203.02	5.64
2	लघु जोतें	1 से 2	54722	29.56	79110.01	17.02
3	अर्द्ध मध्यम जोते	2 से 4	54724	29.56	153412.99	33.00
4	मध्यम जोतें	4 से 10	28779	15.55	165581.54	35.61
5	वृहत जोतें	10 से 20	2770	1.50	35197.33	7.57
6	अत्यधिक वृहत जोतें	20 से हैक्टेयर से अधिक	176	0.10	5426.16	1.17
सभी आकार के समुहों का योग			185114	100.00	464931.05	100.00

स्रोत–कृषि गणना प्रतिवेदन, (2000–2001), झुंझुनूं

2. लघु जोत– 1 से 2 हैक्टेयर

अध्ययन क्षेत्र में लघु कृषकों की संख्या कुल कृषकों की लगभग 30 प्रतिशत है, इस वर्ग में 1 से 2 हैक्टयर आकार के जोतों को सम्मिलित किया जाता है, इस आकार के जोतों की संख्या कुल जोतों का लगभग 29.56 प्रतिशत है, परन्तु इनके स्वामित्व में कुल कृषि भूमि का मात्र 17.02 प्रतिशत है। सिंचाई के साधन उपलब्ध होने पर इन्हे वर्ष भर अपने ही खेतों में रोजगार मिल सकता है, लघु जोतों के लगभग दो तिहाई कृषक क्षेत्र में केन्द्रीत है। अध्ययन क्षेत्र में सीमान्त जोतों की संख्या 44 हजार है, इस तरह लघु कृषकों की संख्या 54.7 हजार है। सीमान्त व लघु जोतों की कुल संख्या लगभग 98 हजार है, जो कुल जोतों का 53 प्रतिशत है, जबकि उनके पास कुल कृषि भूमि का स्वामित्व 22.66 प्रतिशत है। एक तरफ निम्न स्तर पर सीमान्त कृषकों, कृषि श्रमिकों व लघु कृषकों का बाहुल्य है, वहीं दूसरी और 29 प्रतिशत कृषको के पास लगभग 73 प्रतिशत कृषि भूमि है, बहुत से सीमान्त एवं लघु परिवारों में गंभीर बीमारी अथवा शादी विवाह में अधिक खर्च होने से अथवा जमीन सम्बन्धी मामलों में फस जाने से अपनी जमीन बेचकर कृषि श्रमिक बन जाते है। इस कारण क्षेत्र में भूमिहीन कृषि श्रमिकों में लगातार वृद्धी हो रही है।

© 2025 अमित कुमार, डॉ. एस. एस. खींची. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

3. अर्द्ध मध्यम जोत– 2 से 4 हैक्टयर

शोध क्षेत्र में अर्द्ध–मध्यम जोतों की संख्या लगभग 55 हजार है, जो कुल जोतों का 30 प्रतिशत और 33 प्रतिशत भाग में विस्तृत है, इस वर्ग के जोतों के वितरण का प्रतिरूप सीमान्त एवं लघु जोतों की तरह व्याप्त नहीं है, अर्द्ध मध्यम जोतों का आकार जिले की सभी तहसीलों में व्याप्त है, इस वर्ग के कृषक सहायक कार्य करके अपनी स्थिति को सामान्य बनाऐ रखते है।

4. मध्यम आकार के जोत– 4 से 10 हैक्टयर

अध्ययन क्षेत्र में मध्यम आकार के जोतों की संख्या 29 हजार के लगभग है, जो कुल जोतों की संख्या का लगभग 15.55 प्रतिशत है। इस वर्ग के कृषकों के स्वामित्व में कुल कृषि भूमि का लगभग 35.61 प्रतिशत भाग है। इस प्रकार के कृषक प्रति हैक्टयर अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए पर्याप्त जोखिम के साथ विभिन्न निवेशों का प्रयोग करते है। इस प्रकार के जोतों वाले कृषक कृषि फार्म में लगाई गई लागत को प्राप्त करने में अधिक सक्षम होते है, और इन्हे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती के अतिरिक्त उत्पादन भी होता है, जिसमें इनकी आर्थिक स्थिती सम्पन्न होती हैं, और अधिक खाद्यान पैदा करने हेतु कृषि यंत्रों तथा अधिक निवेशों का उपयोग करते हैं।

5. वृहत जोत– 10 से 20 हैक्टयर

इस वर्ग के जोतों का औसत आकार 10 से 20 हैक्टयर के मध्य है, जिले के कुल जोतों की संख्या का 2070 है, जिनके अन्तर्गत कुल जोतों के क्षेत्रफल का 2.50 प्रतिशत भाग सम्मिलित है, इनके स्वामित्व में 35197.33 हैक्टयर कृषि भूमि है, जो कुल भूमि का 7.57 प्रतिशत है। इस प्रकार 1.50 प्रतिशत कृषकों के पास 7.57 प्रतिशत कृषि भूमि है। इस प्रकार की जोतें लगभग सभी तहसीलों में सुवितरित है, तथा सामंती काल के अवशेष है। वृहत आकार के जोतों वाले कृषक अधिक उत्पाद देने वाले बीजों, उर्वरकों एवं कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करने में अधिक पूंजी का उपयोग करने के सक्षम होते हैं।

6. वृहत जोत– 20 हैक्टेयर से अधिक

शोध क्षेत्र में इस प्रकार के जोतों की संख्या बहुत कम (170) है, जो कुल जोतों की संख्या का 0.60 प्रतिशत है। इनके स्वामित्व में कुल कृषि भूमि का 1.17 प्रतिशत है, अधिक वृहत जोत वाले कृषक विपुल उत्पाद देने वाले बीजों उर्वरकों, सिंचाई साधनों, कीटनाशक दवाओं आदि का प्रयोग में पूंजी व्यय करने तथा कृषि यंत्रों के खरीदने में सक्षम होते है। अध्ययन क्षेत्र में वृहत जोतों की संख्या व क्षेत्रफल काफी कम पाया गया हैं।

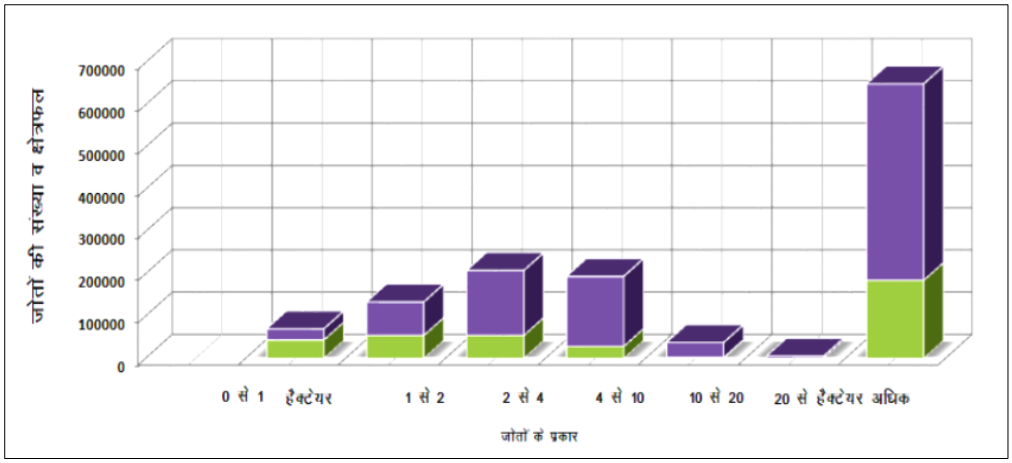

आरेख 4.1: जोतो की सांख्य व क्षेत्रफल

जोतों का औसत आकार –

जोतों का औसत आकार कृषक जनसंख्या के घनत्व भूमि की उर्वरता तथा तकनीकी गतिविधियों के प्रयोग से नियन्त्रित हैं, अध्ययन क्षेत्र में जोतों के औसत आकार को ज्ञात करने लिए निम्न सूत्र को आधार माना गया। जोतों का औसत आकार = जोतों का कुल क्षेत्रफल / जोतों की कुल जनसंख्या

तालिका 4.6: जोतों का औसत आकार वर्ष – 2021–22

क्र.स.	जोतें	जोतों का आकार हैक्टेयर में	कुल जोतों की संख्या	क्षेत्रफल हैक्टेयर में	जोतों का औसत आकार
1	सीमान्त जोतें	0 से 1 हैक्टेयर	43943	26203.02	0.60
2	लघु जोतें	1 से 2	54722	79110.01	1.45
3	अर्द्ध मध्यम जोतें	2 से 4	54724	153412.99	2.80
4	मध्यम जोतें	4 से 10	28779	165581.54	5.75
5	वृहत जोतें	10 से 20	2770	35197.33	12.71
6	अत्यधिक वृहत जोतें	20 से हैक्टेयर से अधिक	176	5426.16	30.83
सभी आकार के समुहों का योग			185114	464931.05	2.51

स्रोत–कृषि गणना प्रतिवेदन, (2000–2001), झुंझुनूं

शोध के लिऐ चयनित अध्ययन क्षेत्र में जोतों के औसत आकार में भारी असमानताऐं मिलती है, क्षेत्र में सबसे अधिक औसत आकार 30.83 है, वृहत जोतों का औसत आकार (10 से 20 हैक्टेयर) वाले जोतों का औसत आकार 12.71 है, मध्यम आकार के जोतों (4 से 10 हैक्टेयर) का औसत आकार 5.75 पाया गया है, वहीं क्षेत्र में अर्द्ध मध्यम जोतें (2 से 4 हैक्टेयर) का औसत आकार 2.80 है, क्षेत्र में लघु जोतें (1 से 2 हैक्टेयर) आकार वाली जोतों का औसत 1.45 है, जबकि सीमान्त जोतों (0 से 1 हैक्टेयर) आकार वाली जोतों का औसत आकार 0.60 पाया गया है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में जोतों के औसत आकार भारी असमानताऐं लिए है।

© 2025 अमित कुमार, डॉ. एस. एस. खींची. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

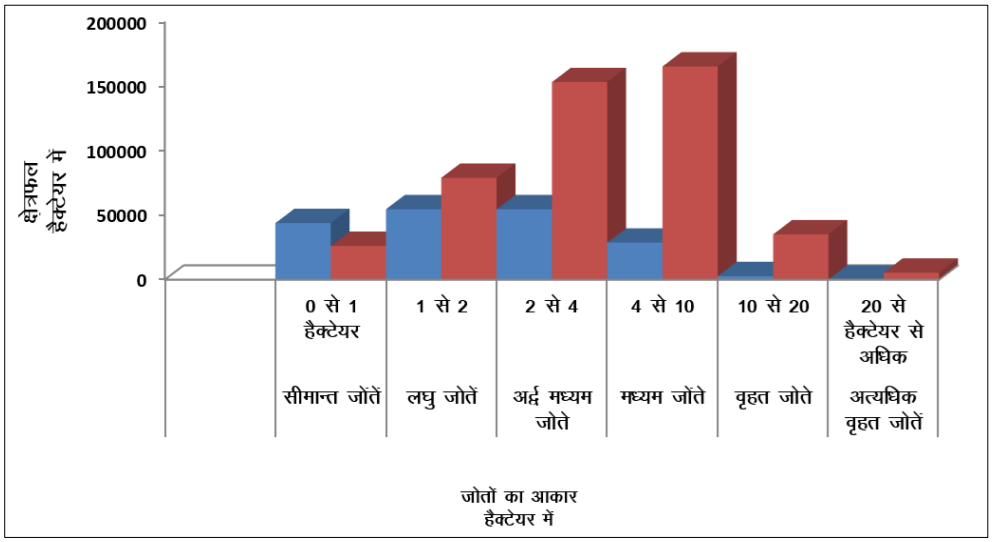

आरेख 4.2: जोतों आकार का औसत आकार

निष्कर्ष

अध्ययन क्षेत्र के जोतों में भारी अन्तर देखने को मिलता हैं, जिसका प्रमुख कारण जोत पैतृक सम्पति का हैं। जिले में सिंचाई पानी के स्थाई साधन न होने के कारण जिलें सिंचाई कुऐ, नलकूप एवं मानसून पर निर्भर है, अतः क्षेत्र के कृषक कुल उपलब्ध भूमि पर फसलें उगाई जाती हैं, जिसमें खाद्यान फसलों की अधिकता मिलती है। क्षेत्र में बढती जनसंख्या से जोतों के आकार में बदलाव आया है, जिससे बड़े आकार के जोत छोटे आकार में बदल गऐ है। अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार जोतें कृषि कार्य करने के प्रकार पर निर्भर है, व्यक्तिगत, वित्तीय एवं प्राविधिक प्रबन्धन के द्वारा संसाधनों व सुविधाओं को प्रदान कर जोत के प्रामाणिक आकार को विकसित किया जा सकता है, अन्य व्यवसायों के अवसरों की अल्पता के कारण लोग कृषि भूमि पर अधिक आश्रित है। वर्तमान में जोत छोटे एवं बिखरे टुकड़ो में विभाजित हो रहे हैं, पिता की निजी सम्पति की तरह भूमि का समान विभाजन स्थिति व उर्वरता के अनुसार उसके पुत्र तथा पुत्रियों के बीच होता है, जिस कारण वृहत जोत लघु व सीमान्त जोतों में बदलते जा रहे है, जोतों का औसत आकार भूमि पर जनसंख्या बढ़ते दबाव, कृषि आत्मनिर्भरता एवं उत्तराधिकारी नियमों के साथ–साथ सामाजिक आर्थिक परिस्थितियां भौतिक दशाऐं एवं शस्य गहनता से निर्धारित होता हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. Anonymous. Agricultural land holdings pattern in India. NABARD Rural Pulse. Mumbai: Department of Economic Analysis and Research; 2014.
2. Chand R, Lakshmi PA, Prasanna, Singh A. Farm size and productivity: Understanding the strengths of smallholders and improving their livelihoods. Economic and Political Weekly. 2011;46:26-27.
3. Dev SM. Small farmers in India: Challenges and opportunities. Mumbai: Indira Gandhi Institute of Development Research; 2012.
4. Grewal B, Grunfeld H, Sheehan P. The contribution of agricultural growth to poverty reduction. ACIAR Impact Assessment Series Report No. 76. Canberra: Australian Centre for International Agricultural Research; 2012.
5. Mavi AK, Kaur P. Poverty among small and marginal farmers in Sangrur District. International Journal of Science and Research. 2014;3(10):1438-1449.
6. Singh M. Challenges and opportunities for sustainable viability of marginal and small farmers in India. New Delhi: Division of Agricultural Economics, Indian Agricultural Research Institute; 2012.
7. Thapa G, Gaiha R. Smallholder farming in Asia and the Pacific: Challenges and opportunities. Paper presented at: IFAD Conference on New Directions for Smallholder Agriculture; 2011 Jan 24-25.
8. Khinchi SS. Biodiversity distribution and conservation. Jaipur: Pointer Publishers; 2015. ISBN: 978-81-7132-798-0.
9. Khinchi SS, Tanwar M. Biodiversity—An overview. Jaipur: Oxford Book Company; 2016. ISBN: 9789350302446.
10. Khinchi SS, Tanwar M. Environmental aspects of biodiversity. Jaipur: Oxford Book Company; 2016. ISBN: 9789350302453.
11. Khinchi SS, Tanwar M. Global climate change and biodiversity. New Delhi: VL Media Solutions; 2016. ISBN: 978-93-85068-66-9.
12. Khinchi SS, Tanwar M. Environmental challenges, biodiversity and sustainable development. New Delhi: VL Media Solutions; 2017. ISBN: 9789386229038.
13. Khinchi SS, Pachori S. Biodiversity: A geographical study. Channi: Notion Press; 2018. ISBN: 978-1-643-24364-9.
14. Khinchi SS, Pachori S. People's participation in biodiversity conservation: A geographical study of Nagaur District of Rajasthan, India. In: Parihar R, editor. What is Geography? Vol I (The Voice of Grass-root Scholars).

© 2025 अमित कुमार, डॉ. एस. एस. खींची. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

Jodhpur: Associate Book Co.; 2010. p. 131-146. ISBN: 81-88875-00-7.

15. Khinchi SS, Tanwar M. Globalization and environmental sustainability. In: Chhabra MS, editor. Global Perspectives of Education and Social Sciences. Ludhiana: Gujaranwala Guru Nanak Institute of Management & Technology; 2017. p. 92-95. ISBN: 978-93-85835-81-0.
16. Verma SK, Khinchi SS. Biodiversity for food and agriculture. In: Verma SK, editor. Environmental Crisis and Conservation. Sholapur (MS): Laxmi Book Publication; 2015. p. 81-89. ISBN: 978-1-329-27221-7.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

CONFERENCE ORGANIZERS

- Desert Research Association (DRA), Headquarters – Jodhpur
- Nehru Study Centre, Jai Narain Vyas University, Jodhpur
- Government Girls College, Jhalamand (Jodhpur)
- Department of Geography, Dr. Bhim Rao Ambedkar Government College, Sri Ganganagar

In Collaboration with Kalinga University, Raipur (Chhattisgarh)

Disclaimer: The views, opinions, statements, and conclusions expressed in the papers, abstracts, presentations, and other scholarly contributions included in this conference are solely those of the respective authors. The organisers and publisher shall not be held responsible for any loss, harm, damage, or consequences — direct or indirect — arising from the use, application, or interpretation of any information, data, or findings published or presented in this conference. All responsibility for the originality, authenticity, ethical compliance, and correctness of the content lies entirely with the respective authors.

© 2025 अमित कुमार, डॉ. एस. एस. खींची. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/